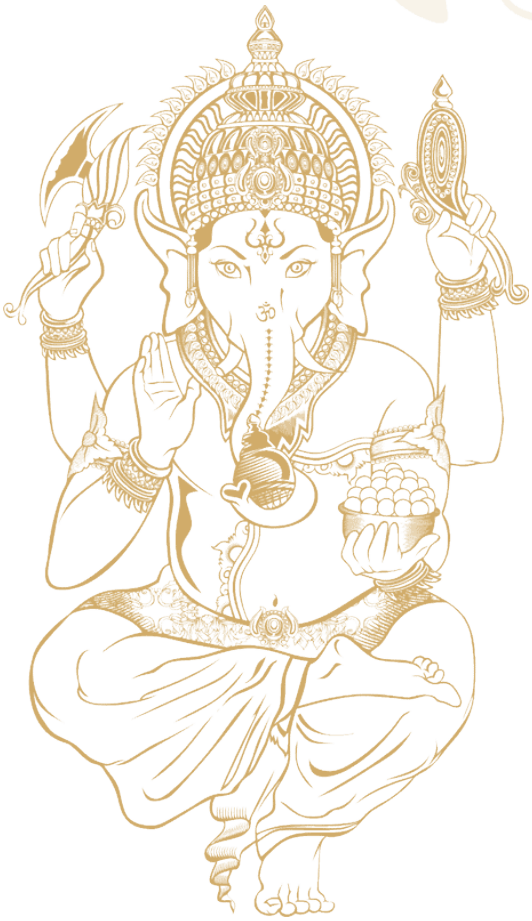

# Mr.ashish

03 Jun 1996

05:30 AM

Beohari

Model: Web-MyKundli

Order No: 120572701

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग |
| **जन्म तिथि** | **03/06/1996** |
| दिन | सोमवार |
| **जन्म समय** | **05:30:00 घंटे** |
| इष्ट | 00:33:36 घटी |
| **स्थान** | **Beohari** |
| राज्य | Madhya Pradesh |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 24:03:00 उत्तर |
| रेखांश | 81:23:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:04:28 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 05:25:32 घंटे |
| वेलान्तर | 00:01:52 घंटे |
| साम्पातिक काल | 22:12:26 घंटे |
| सूर्योदय | 05:16:33 घंटे |
| सूर्यास्त | 18:48:53 घंटे |
| दिनमान | 13:32:20 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण |
| सूर्य स्थिति(गोल) | उत्तर |
| ऋतु | ग्रीष्म |
| सूर्य के अंश | 18:53:30 वृष |
| लग्न के अंश | 21:17:01 वृष |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | वृष - शुक्र |
| **राशि-स्वामी** | **धनु - गुरु** |
| **नक्षत्र-चरण** | **मूल - 2** |
| नक्षत्र स्वामी | केतु |
| योग | शुभ |
| करण | तैतिल |
| गण | राक्षस |
| योनि | श्वान |
| नाड़ी | आद्य |
| वर्ण | क्षत्रिय |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | मृग |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | अग्नि |
| जन्म नामाक्षर | यो-योगेश |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | लौह - ताम्र |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | मिथुन |

# पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1918 | ज्येष्ठ | 13 |
| पंजाबी | संवत : 2053 | ज्येष्ठ | 21 |
| बंगाली | सन् : 1403 | ज्येष्ठ | 20 |
| तमिल | संवत : 2053 | वैकासी | 21 |
| केरल | कोल्लम : 1171 | इदवम | 20 |
| नेपाली | संवत : 2053 | ज्येष्ठ | 21 |
| चैत्रादि | संवत : 2053 | आषाढ़ | कृष्ण 2 |
| कार्तिकादि | संवत : 2053 | ज्येष्ठ | कृष्ण 2 |

**पंचांग**

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 19:38:17
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 19:26:31 घंटे
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय कालीन योग ____: शुभ
योग समाप्ति काल _____: 25:18:00 घंटे
जन्म योग _____: शुभ
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 09:21:10 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 18:41:23
भभोग _____: 53:32:39
भोग्य दशा काल _____: केतु 4 वर्ष 6 मा 22 दि

**घात चक्र**

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

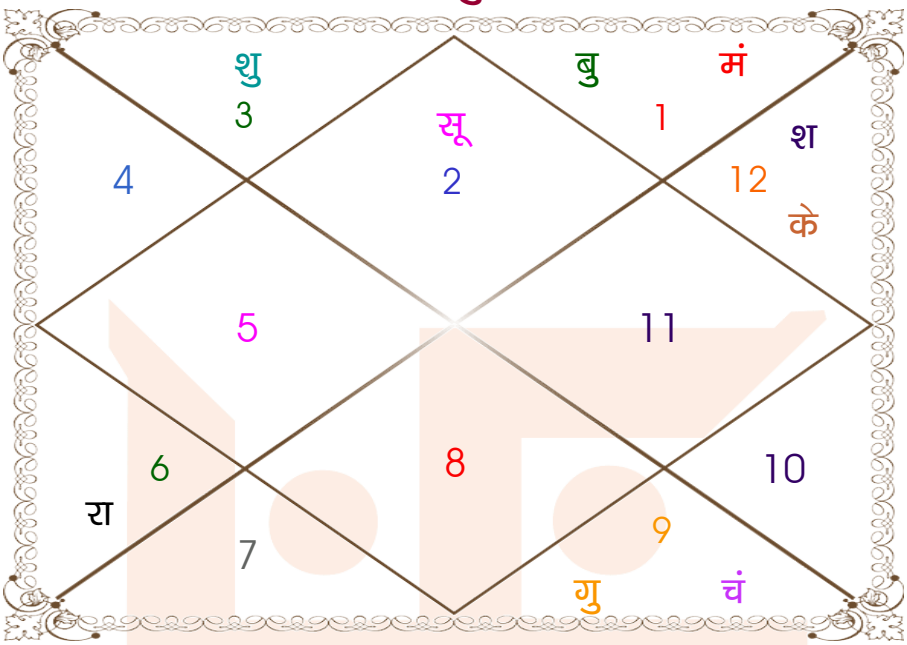


## चन्द्र कुंडली

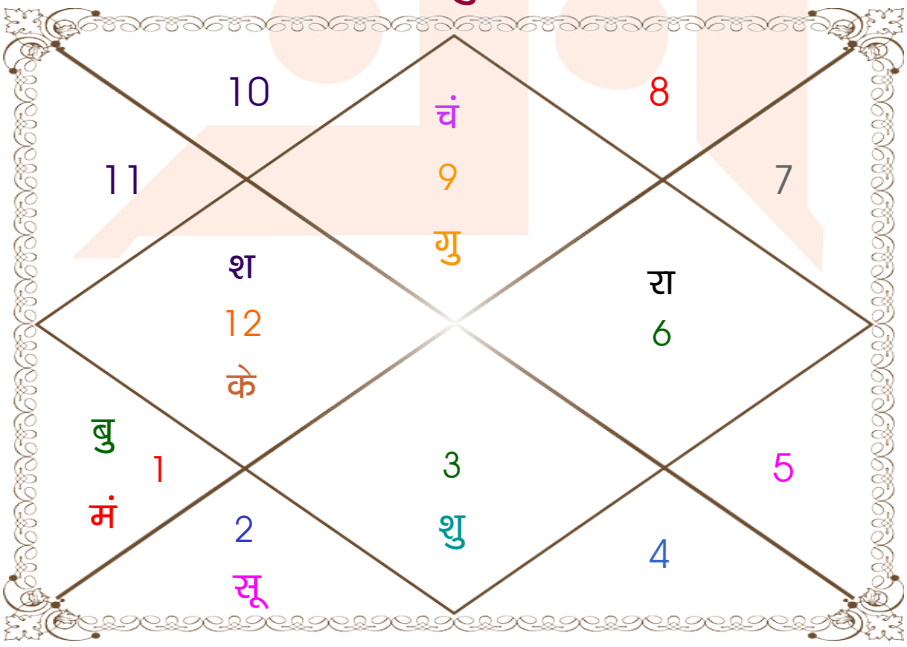

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

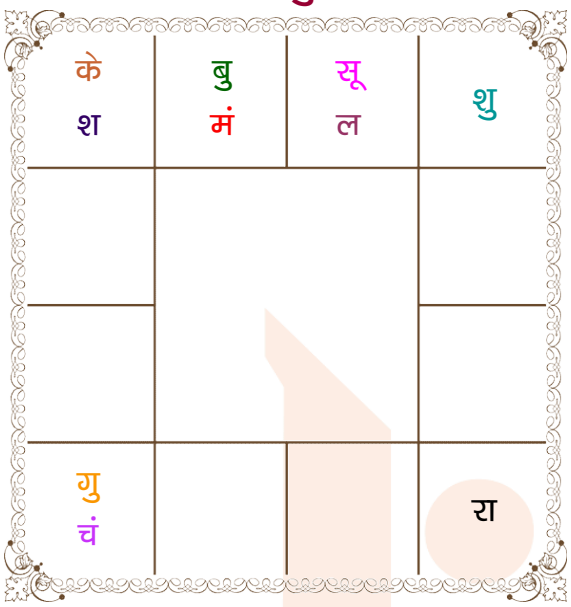


## लग्न कुंडली

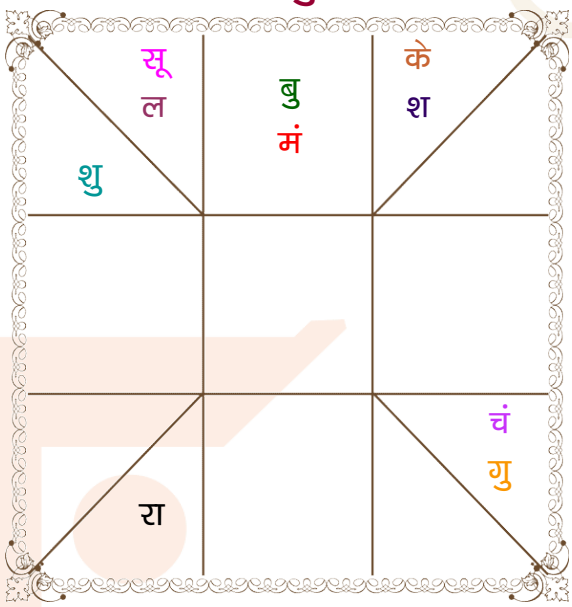


### विंशोत्तरी
### केतु 4वर्ष 6मा 22दि

**केतु**

**03/06/1996**

**26/12/2113**

| | |
|---|---|
| केतु | 24/12/2000 |
| शुक्र | 24/12/2020 |
| सूर्य | 25/12/2026 |
| चन्द्र | 24/12/2036 |
| मंगल | 25/12/2043 |
| राहु | 25/12/2061 |
| गुरु | 25/12/2077 |
| शनि | 24/12/2096 |
| बुध | 26/12/2113 |

### योगिनी
### उल्का 3वर्ष 10मा 27दि

**भद्रिका**

**01/05/2025**

**01/05/2030**

| | |
|---|---|
| भद्रिका | 09/01/2026 |
| उल्का | 10/11/2026 |
| सिद्धा | 31/10/2027 |
| संकटा | 10/12/2028 |
| मंगला | 29/01/2029 |
| पिंगला | 11/05/2029 |
| धान्या | 10/10/2029 |
| भ्रामरी | 01/05/2030 |

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | वृष | 21:17:01 | 354:27:14 | रोहिणी | 4 | 4 | शुक्र | चंद्र | शुक्र | --- |
| सूर्य | | | वृष | 18:53:30 | 00:57:26 | रोहिणी | 3 | 4 | शुक्र | चंद्र | बुध | शत्रु राशि |
| चंद्र | | | धनु | 04:38:48 | 14:56:05 | मूल | 2 | 19 | गुरु | केतु | चंद्र | सम राशि |
| मंगल | | | मेष | 29:16:08 | 00:43:28 | कृतिका | 1 | 3 | मंगल | सूर्य | राहु | स्वराशि |
| बुध | | | मेष | 27:16:31 | 00:27:31 | कृतिका | 1 | 3 | मंगल | सूर्य | सूर्य | सम राशि |
| गुरु | व | | धनु | 22:32:03 | 00:05:09 | पूर्वाषाढ़ा | 3 | 20 | गुरु | शुक्र | शनि | स्वराशि |
| शुक्र | व | | मिथु | 00:46:10 | 00:31:00 | मृगशिरा | 3 | 5 | बुध | मंगल | बुध | मित्र राशि |
| शनि | | | मीन | 11:52:41 | 00:04:18 | उ०भाद्रपद | 3 | 26 | गुरु | शनि | चंद्र | सम राशि |
| राहु | व | | कन्या | 21:43:17 | 00:08:29 | हस्त | 4 | 13 | बुध | चंद्र | शुक्र | मूलत्रिकोण |
| केतु | व | | मीन | 21:43:17 | 00:08:29 | रेवती | 2 | 27 | गुरु | बुध | सूर्य | मूलत्रिकोण |
| हर्ष | व | | मक | 10:31:16 | 00:01:11 | श्रवण | 1 | 22 | शनि | चंद्र | चंद्र | --- |
| नेप | व | | मक | 03:38:14 | 00:01:01 | उत्तराषाढ़ा | 3 | 21 | शनि | सूर्य | शनि | --- |
| प्लूटो | व | | वृश्चि | 07:37:16 | 00:01:37 | अनुराधा | 2 | 17 | मंगल | शनि | केतु | --- |
| दशम भाव | | | कुंभ | 07:15:31 | -- | शतभिषा | -- | 24 | शनि | राहु | राहु | -- |

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:29

## लग्न-चलित

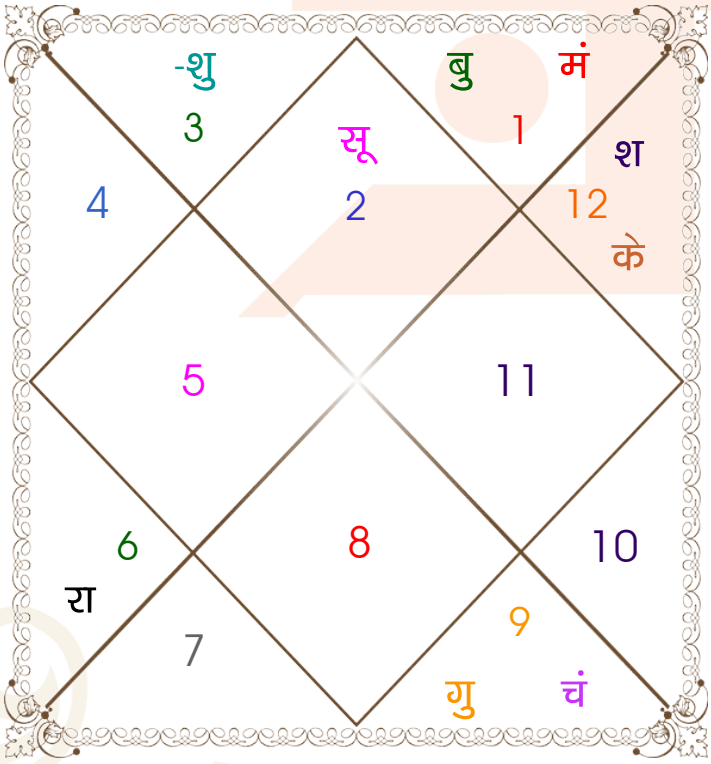


## चन्द्र कुंडली

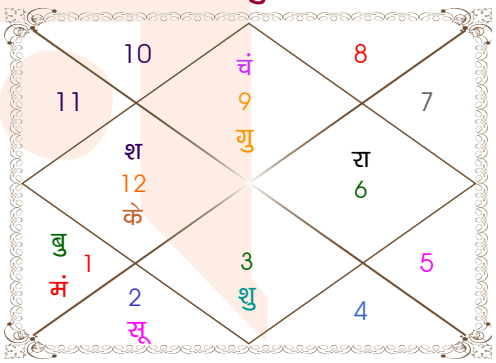


## नवमांश कुंडली

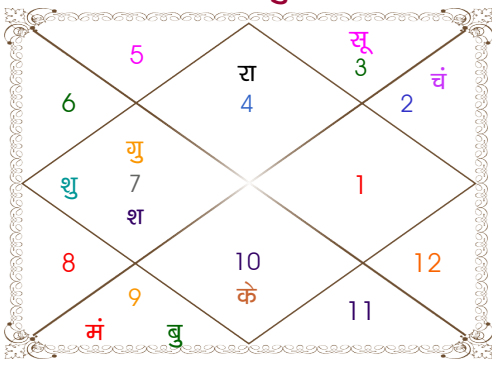

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | वृष | 03:56:46 | वृष | 21:17:01 |
| 2 | मिथुन | 03:56:46 | मिथुन | 16:36:31 |
| 3 | मिथुन | 29:16:16 | कर्क | 11:56:01 |
| 4 | कर्क | 24:35:46 | सिंह | 07:15:31 |
| 5 | सिंह | 24:35:46 | कन्या | 11:56:01 |
| 6 | कन्या | 29:16:16 | तुला | 16:36:31 |
| 7 | वृश्चिक | 03:56:46 | वृश्चिक | 21:17:01 |
| 8 | धनु | 03:56:46 | धनु | 16:36:31 |
| 9 | धनु | 29:16:16 | मकर | 11:56:01 |
| 10 | मकर | 24:35:46 | कुम्भ | 07:15:31 |
| 11 | कुम्भ | 24:35:46 | मीन | 11:56:01 |
| 12 | मीन | 29:16:16 | मेष | 16:36:31 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | वृष | 21:17:01 |
| 2 | मिथुन | 15:46:14 |
| 3 | कर्क | 09:58:52 |
| 4 | सिंह | 07:15:31 |
| 5 | कन्या | 09:48:43 |
| 6 | तुला | 16:14:01 |
| 7 | वृश्चिक | 21:17:01 |
| 8 | धनु | 15:46:14 |
| 9 | मकर | 09:58:52 |
| 10 | कुम्भ | 07:15:31 |
| 11 | मीन | 09:48:43 |
| 12 | मेष | 16:14:01 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती |
| अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा |
| मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा |

## चलित कुंडली

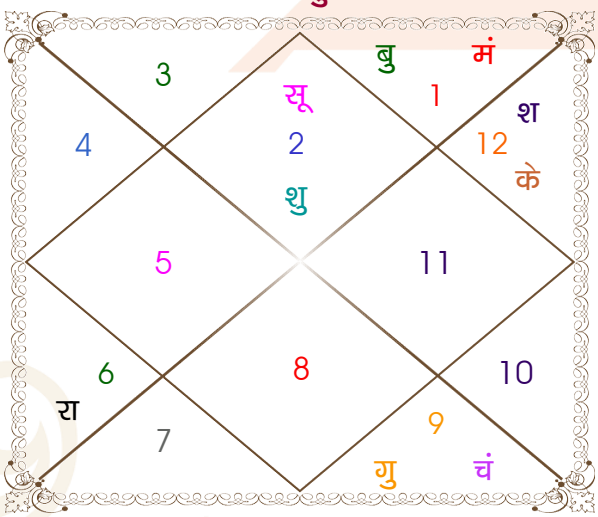


## भाव कुंडली

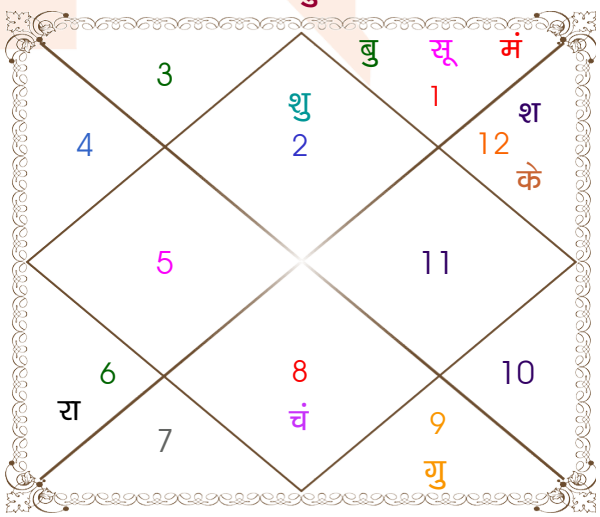

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : केतु 4 वर्ष 6 मास 22 दिन

| केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 03/06/1996 | | 24/12/2000 | | 24/12/2020 | | 25/12/2026 | | 24/12/2036 | |
| 24/12/2000 | | 24/12/2020 | | 25/12/2026 | | 24/12/2036 | | 25/12/2043 | |
| | 00/00/0000 | शुक्र | 25/04/2004 | सूर्य | 13/04/2021 | चंद्र | 25/10/2027 | मंगल | 23/05/2037 |
| | 00/00/0000 | सूर्य | 25/04/2005 | चंद्र | 13/10/2021 | मंगल | 25/05/2028 | राहु | 10/06/2038 |
| | 03/06/1996 | चंद्र | 25/12/2006 | मंगल | 17/02/2022 | राहु | 24/11/2029 | गुरु | 17/05/2039 |
| चंद्र | 28/06/1996 | मंगल | 24/02/2008 | राहु | 12/01/2023 | गुरु | 26/03/2031 | शनि | 25/06/2040 |
| मंगल | 24/11/1996 | राहु | 24/02/2011 | गुरु | 31/10/2023 | शनि | 25/10/2032 | बुध | 22/06/2041 |
| राहु | 13/12/1997 | गुरु | 25/10/2013 | शनि | 12/10/2024 | बुध | 26/03/2034 | केतु | 18/11/2041 |
| गुरु | 18/11/1998 | शनि | 24/12/2016 | बुध | 19/08/2025 | केतु | 25/10/2034 | शुक्र | 18/01/2043 |
| शनि | 28/12/1999 | बुध | 25/10/2019 | केतु | 25/12/2025 | शुक्र | 25/06/2036 | सूर्य | 26/05/2043 |
| बुध | 24/12/2000 | केतु | 24/12/2020 | शुक्र | 25/12/2026 | सूर्य | 24/12/2036 | चंद्र | 25/12/2043 |

| राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25/12/2043 | | 25/12/2061 | | 25/12/2077 | | 24/12/2096 | | 26/12/2113 | |
| 25/12/2061 | | 25/12/2077 | | 24/12/2096 | | 26/12/2113 | | 00/00/0000 | |
| राहु | 06/09/2046 | गुरु | 12/02/2064 | शनि | 27/12/2080 | बुध | 23/05/2099 | केतु | 24/05/2114 |
| गुरु | 30/01/2049 | शनि | 25/08/2066 | बुध | 07/09/2083 | केतु | 20/05/2100 | शुक्र | 24/07/2115 |
| शनि | 07/12/2051 | बुध | 30/11/2068 | केतु | 15/10/2084 | शुक्र | 21/03/2103 | सूर्य | 29/11/2115 |
| बुध | 25/06/2054 | केतु | 06/11/2069 | शुक्र | 16/12/2087 | सूर्य | 26/01/2104 | चंद्र | 04/06/2116 |
| केतु | 14/07/2055 | शुक्र | 07/07/2072 | सूर्य | 27/11/2088 | चंद्र | 26/06/2105 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 14/07/2058 | सूर्य | 25/04/2073 | चंद्र | 28/06/2090 | मंगल | 23/06/2106 | | 00/00/0000 |
| सूर्य | 07/06/2059 | चंद्र | 25/08/2074 | मंगल | 07/08/2091 | राहु | 10/01/2109 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 06/12/2060 | मंगल | 01/08/2075 | राहु | 13/06/2094 | गुरु | 18/04/2111 | | 00/00/0000 |
| मंगल | 25/12/2061 | राहु | 25/12/2077 | गुरु | 24/12/2096 | शनि | 26/12/2113 | | 00/00/0000 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 4 वर्ष 6 मा 20 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - केतु | | सूर्य - शुक्र | | चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगल | | चंद्र - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/08/2025 | | 25/12/2025 | | 25/12/2026 | | 25/10/2027 | | 25/05/2028 | |
| 25/12/2025 | | 25/12/2026 | | 25/10/2027 | | 25/05/2028 | | 24/11/2029 | |
| केतु | 26/08/2025 | शुक्र | 24/02/2026 | चंद्र | 19/01/2027 | मंगल | 07/11/2027 | राहु | 16/08/2028 |
| शुक्र | 17/09/2025 | सूर्य | 14/03/2026 | मंगल | 06/02/2027 | राहु | 09/12/2027 | गुरु | 28/10/2028 |
| सूर्य | 23/09/2025 | चंद्र | 13/04/2026 | राहु | 24/03/2027 | गुरु | 06/01/2028 | शनि | 22/01/2029 |
| चंद्र | 04/10/2025 | मंगल | 05/05/2026 | गुरु | 03/05/2027 | शनि | 09/02/2028 | बुध | 10/04/2029 |
| मंगल | 11/10/2025 | राहु | 28/06/2026 | शनि | 20/06/2027 | बुध | 10/03/2028 | केतु | 12/05/2029 |
| राहु | 30/10/2025 | गुरु | 16/08/2026 | बुध | 03/08/2027 | केतु | 22/03/2028 | शुक्र | 11/08/2029 |
| गुरु | 16/11/2025 | शनि | 13/10/2026 | केतु | 20/08/2027 | शुक्र | 27/04/2028 | सूर्य | 08/09/2029 |
| शनि | 07/12/2025 | बुध | 04/12/2026 | शुक्र | 10/10/2027 | सूर्य | 08/05/2028 | चंद्र | 23/10/2029 |
| बुध | 25/12/2025 | केतु | 25/12/2026 | सूर्य | 25/10/2027 | चंद्र | 25/05/2028 | मंगल | 24/11/2029 |

| चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | | चंद्र - बुध | | चंद्र - केतु | | चंद्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24/11/2029 | | 26/03/2031 | | 25/10/2032 | | 26/03/2034 | | 25/10/2034 | |
| 26/03/2031 | | 25/10/2032 | | 26/03/2034 | | 25/10/2034 | | 25/06/2036 | |
| गुरु | 28/01/2030 | शनि | 26/06/2031 | बुध | 06/01/2033 | केतु | 07/04/2034 | शुक्र | 04/02/2035 |
| शनि | 15/04/2030 | बुध | 16/09/2031 | केतु | 05/02/2033 | शुक्र | 13/05/2034 | सूर्य | 06/03/2035 |
| बुध | 23/06/2030 | केतु | 19/10/2031 | शुक्र | 02/05/2033 | सूर्य | 24/05/2034 | चंद्र | 26/04/2035 |
| केतु | 22/07/2030 | शुक्र | 24/01/2032 | सूर्य | 28/05/2033 | चंद्र | 10/06/2034 | मंगल | 31/05/2035 |
| शुक्र | 11/10/2030 | सूर्य | 22/02/2032 | चंद्र | 10/07/2033 | मंगल | 23/06/2034 | राहु | 31/08/2035 |
| सूर्य | 04/11/2030 | चंद्र | 10/04/2032 | मंगल | 09/08/2033 | राहु | 25/07/2034 | गुरु | 20/11/2035 |
| चंद्र | 15/12/2030 | मंगल | 14/05/2032 | राहु | 26/10/2033 | गुरु | 22/08/2034 | शनि | 24/02/2036 |
| मंगल | 12/01/2031 | राहु | 08/08/2032 | गुरु | 03/01/2034 | शनि | 25/09/2034 | बुध | 20/05/2036 |
| राहु | 26/03/2031 | गुरु | 25/10/2032 | शनि | 26/03/2034 | बुध | 25/10/2034 | केतु | 25/06/2036 |

| चंद्र - सूर्य | | मंगल - मंगल | | मंगल - राहु | | मंगल - गुरु | | मंगल - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25/06/2036 | | 24/12/2036 | | 23/05/2037 | | 10/06/2038 | | 17/05/2039 | |
| 24/12/2036 | | 23/05/2037 | | 10/06/2038 | | 17/05/2039 | | 25/06/2040 | |
| सूर्य | 04/07/2036 | मंगल | 02/01/2037 | राहु | 19/07/2037 | गुरु | 26/07/2038 | शनि | 20/07/2039 |
| चंद्र | 19/07/2036 | राहु | 25/01/2037 | गुरु | 08/09/2037 | शनि | 18/09/2038 | बुध | 15/09/2039 |
| मंगल | 30/07/2036 | गुरु | 13/02/2037 | शनि | 08/11/2037 | बुध | 05/11/2038 | केतु | 09/10/2039 |
| राहु | 26/08/2036 | शनि | 09/03/2037 | बुध | 01/01/2038 | केतु | 25/11/2038 | शुक्र | 16/12/2039 |
| गुरु | 20/09/2036 | बुध | 30/03/2037 | केतु | 24/01/2038 | शुक्र | 21/01/2039 | सूर्य | 05/01/2040 |
| शनि | 18/10/2036 | केतु | 08/04/2037 | शुक्र | 29/03/2038 | सूर्य | 07/02/2039 | चंद्र | 07/02/2040 |
| बुध | 13/11/2036 | शुक्र | 03/05/2037 | सूर्य | 17/04/2038 | चंद्र | 07/03/2039 | मंगल | 02/03/2040 |
| केतु | 24/11/2036 | सूर्य | 10/05/2037 | चंद्र | 19/05/2038 | मंगल | 27/03/2039 | राहु | 02/05/2040 |
| शुक्र | 24/12/2036 | चंद्र | 23/05/2037 | मंगल | 10/06/2038 | राहु | 17/05/2039 | गुरु | 25/06/2040 |

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 3 |
| भाग्यांक | 7 |
| मित्र अंक | 3, 5, 7, 9 |
| शत्रु अंक | 1, 4, 8 |
| शुभ वर्ष | 21,30,39,48,57 |
| शुभ दिन | शनि, बुध, शुक्र |
| शुभ ग्रह | शनि, बुध, शुक्र |
| मित्र राशि | मीन, सिंह |
| मित्र लग्न | सिंह, मकर, मीन |
| अनुकूल देवता | हनुमान |
| शुभ रत्न | हीरा |
| शुभ उपरत्न | जरकिन, ओपल |
| भाग्य रत्न | नीलम |
| शुभ धातु | रजत |
| शुभ रंग | रजत |
| शुभ दिशा | दक्षिणपूर्व |
| शुभ समय | सूर्योदय |
| दान पदार्थ | मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न | चावल |
| दान द्रव्य | दूध |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| नीलम | शनि | 86% | धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति |
| माणिक्य | सूर्य | 75% | स्वास्थ्य, सुख |
| हीरा | शुक्र | 75% | धन, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति |
| पन्ना | बुध | 69% | कम खर्च, धन, सन्तति सुख |
| गोमेद | राहु | 58% | सन्तति सुख, कम खर्च |
| लहसुनिया | केतु | 32% | हानि, दुर्घटना |
| मोती | चंद्र | 0% | दुर्घटना, पराक्रम हानि |
| मूंगा | मंगल | 0% | व्यय, दाम्पत्य कष्ट |
| पुखराज | गुरु | 0% | दुर्घटना, हानि |

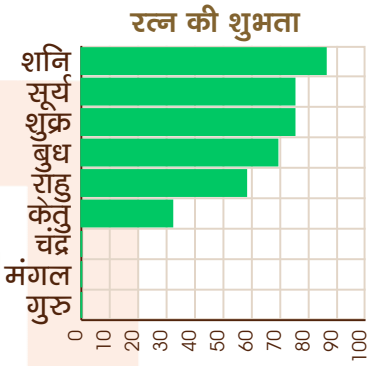


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| केतु | 24/12/2000 | 62% | 0% | 0% | 69% | 0% | 81% | 73% | 41% | 53% |
| शुक्र | 24/12/2020 | 62% | 0% | 0% | 75% | 0% | 88% | 92% | 64% | 44% |
| सूर्य | 25/12/2026 | 88% | 6% | 0% | 69% | 0% | 62% | 73% | 41% | 7% |
| चंद्र | 24/12/2036 | 81% | 19% | 0% | 75% | 0% | 75% | 86% | 41% | 7% |
| मंगल | 25/12/2043 | 81% | 6% | 0% | 56% | 0% | 75% | 86% | 41% | 44% |
| राहु | 25/12/2061 | 62% | 0% | 0% | 69% | 0% | 81% | 92% | 71% | 7% |
| गुरु | 25/12/2077 | 81% | 6% | 0% | 56% | 2% | 62% | 86% | 58% | 32% |
| शनि | 24/12/2096 | 62% | 0% | 0% | 75% | 0% | 81% | 98% | 64% | 7% |
| बुध | 26/12/2113 | 81% | 0% | 0% | 81% | 0% | 81% | 86% | 58% | 32% |

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 03/06/1996-17/04/1998 | ---------- | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 06/09/2004-13/01/2005 | 26/05/2005-01/11/2006 | 10/01/2007-16/07/2007 |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 02/11/2014-26/01/2017 | 21/06/2017-26/10/2017 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 26/01/2017-21/06/2017 | 26/10/2017-24/01/2020 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 13/07/2034-27/08/2036 | ---------- | ---------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ---------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 24/08/2063-06/02/2064 | 09/05/2064-13/10/2065 | 03/02/2066-03/07/2066 |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 05/02/2073-31/03/2073 | 23/10/2073-16/01/2076 | 11/07/2076-11/10/2076 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 16/01/2076-11/07/2076 | 11/10/2076-15/01/2079 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 15/01/2079-12/04/2081 | 03/08/2081-07/01/2082 | ---------- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | धनार्जन |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | सम | पराक्रम हानि |
| साढेसाती प्रथम ढैया | सम | दाम्पत्य कलह |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | अशुभ | दुर्घटना से बचाव |
| साढेसाती तृतीय ढैया | शुभ | भाग्योदय |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

**********

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः

निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

# कालसर्प योग

**अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।**
**योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।**

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुडली में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

## चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

## मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

## बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

## गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

## शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

## शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

## राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

## केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- सूर्य
## ( 24/12/2020 - 25/12/2026 )

सूर्य की महादशा 24/12/2020 को आरंभ और 25/12/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, आत्मा, राजकीय सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है जबकि प्रथम भाव चरित्र, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और सुख का द्योतक है। अतः इस दशा में आपका स्वास्थ्य, सम्पत्ति, शक्ति तथा प्रभुत्व उत्तम होंगे।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य इस दशा में उत्तम रहेगा। किन्तु, शरीर में अत्यधिक ताप होने के कारण आप खसरा आदि संक्रामक रोगों के शिकार हो सकते हैं। अन्यथा आप हृष्टपुष्ट और शक्तिशाली रहेंगे।

सम्पत्ति :

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और आप धनी तथा समृद्धिशाली होंगे। आप अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करेंगे और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप धन तथा जीवन के सारे सुखों से सम्पन्न होंगे। आपको आपके पिता से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप इस दशा में यश और ख्याति प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों में सफल होंगे और डच्चाधिकारिओं का अनुग्रह प्राप्त करेंगे। नौकरीपेशा लोगों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है। आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है या आपका स्थानान्तरण अथवा कार्य-स्थान में परिवर्तन हो सकता है। आप प्रशासनिक कार्यों, व्यापार अथवा सरकारी कार्यों में बहुत अच्छा कर सकते हैं। आपमें प्रशासकीय योग्यता तथा अथक परिश्रम की क्षमता है। आप चिकित्सा तथा लेखा, कोषागार आदि से संबन्धित कार्यों का सुन्दर संचालन कर सकते हैं। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों आदि के प्रबंधक, निदेशक, विक्रय-प्रबंधक आदि के लिए अत्यन्त योग्य हैं। सोने, तांबे तथा रत्नों का व्यवसाय आपके लिये उपयुक्त है।

परिवार (कुटुम्ब) :

आपको आपकी सन्तानों से सुख मिलेगा। आपके परिवार में किसी शिशु का जन्म हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव हो सकते हैं जिन पर धैर्य तथा सहिष्णुता से नियंत्रण किया जा सकता है। आपकी माता प्रभावशाली होंगी और उन्हें सट्टे तथा निवेश से लाभ का सुअवसर मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को आर्थिक लाभ होगा जबकि बड़ों को कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु उन्हें शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी तथा वे संवादपटुता आदि से लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे।

शिक्षा :

आपकी योग में रुचि रहेगी और आप धार्मिक प्रवचन करेंगे या उनकी व्यवस्था करेंगे। आपकी राजनीति में रुचि हो सकती है। आप में विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक कार्यों के आयोजन की अद्‌भुत क्षमता है। आपके उग्र स्वभाव के कारण आपकी अन्यों के साथ शत्रुता हो सकती है, हालाँकि आप दयालु-हृदय हैं।

## अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
## ( 12/10/2024 - 19/08/2025 )

आपकी सूर्य की महादशा 24/12/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 12/10/2024 को प्रारंभ होकर 19/08/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप आयात-निर्यात का काम कर सकते हैं। विदेश की यात्रा हो सकती है। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। व्यापार-उद्योग में विस्तार के लिए धन व्यय हो सकता है। मानसिक शांति, धन का लाभ संभावित हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लोकप्रियता और सम्मान अर्जित करेंगे।

मामा पक्ष के लोगों से लाभ और सुख प्राप्त होंगे। व्यापार के साझेदार को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त होगी, वे मकान बना सकते हैं या निवास में परिवर्तन कर सकते हैं। माता के लिए समृद्ध समय का संकेत है। उन्हें आप से सुख मिलेगा। भाई-बहनों को धन मिलेगा, व्यस्तता बढ़ेगी, कार्यस्थल में परिवर्तन हो सकता है।

सेवारत जातक किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को विनिमय से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। स्नायुतंत्र, आंख और पैरों की समस्याओं से सावधान रहें। बुध मंत्र का जाप और हरी वस्तुओं का दान लाभकारी रहेगा।

ऊँ बुं बुधाय नमः

## अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
## ( 19/08/2025 - 25/12/2025 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 24/12/2020 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/08/2025 को आरंभ होकर 25/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपका समय उत्तम रहेगा। सफलता, प्रोन्नति, भूमि क्रय, उच्चाधिकारियों से सहयोग और सम्मान प्राप्त होंगे। बहुमुखी व्यापार में सक्रिय होकर खूब धन कमा सकते हैं। सरकार और जनता से सम्मानित होंगे। मित्रों से सावधान रहें क्योंकि वे बहका सकते हैं। तंत्र-मंत्र में रुचि की संभावना है। जोखिम उठाने से बचें। संतान के कारण समस्या उत्पन्न हो सकती है। सामान्य स्थान और धर्मस्थल की यात्रा का संकेत है।

जीवनसाथी को निवेश, शोध और तकनीकी क्षेत्र से लाभ होगा। पिता को सहकर्मियों से सहयोग प्राप्त होगा। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

## महादशा :- चन्द्र
## ( 25/12/2026 - 24/12/2036 )

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 25/12/2026 को आरम्भ और 24/12/2036 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। वैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
## ( 25/12/2026 - 25/10/2027 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 25/12/2026 को प्रारंभ होकर 24/12/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/12/2026 को प्रारंभ होकर 25/10/2027 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव को अशुभ समझा जाता है। अष्टम में चंद्र की स्थिति बहुत अशुभ मानी जाती है, परंतु चंद्र के बल के कम-अधिक होने का भी प्रभाव होता है।

आपको इस अवधि में समाज में सफलता मिलेगी। विवाह द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है। जल से संबंधित व्याधिओं से सावधान रहें। नदी, तालाब आदि के निकट सावधान रहें ओर डूबने से बचें। गंभीर बीमारियों से बचाव भी आवश्यक है। अगर कोई रोग होता है तो प्रारंभिक अवस्था में ही उसका निदान करा लें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के यंत्र को धारण करें।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
## ( 25/10/2027 - 25/05/2028 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 25/12/2026 को प्रारंभ होकर 24/12/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 25/10/2027 को प्रारंभ होकर 25/05/2028 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 3, 6 ,7 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आंखों की दृष्टि कमजोर हो सकती है, क्रोध अधिक होगा, झगड़ालू प्रवृत्ति हो सकती है, फ़िज़ूलखर्ची बढ़ सकती है। आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप भी दूसरों के गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप स्वार्थी हो सकते हैं, नफ़रत की भावना बलवती होगी। धन की हानि हो सकती है। कोई व्यक्ति धोखा दे सकता है। सहकर्मियों से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
## ( 25/05/2028 - 24/11/2029 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 25/12/2026 को प्रारंभ हुई और 24/12/2036 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/05/2028 को प्रारंभ होकर 24/11/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। यह शुभ या अशुभ अपनी स्थिति के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपके संतान के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। प्रेम प्रसंग में सफलता मिलेगी। सामाजिक संपर्कों से प्रसन्नता मिलेगी। सट्टे में लाभ हो सकता है। हृदय रोग से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें और 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
## ( 24/11/2029 - 26/03/2031 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 25/12/2026 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 24/11/2029 को प्रारंभ होकर 26/03/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है। बृहस्पति अष्टम में स्थित होकर कुंडली के 12,2,4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप कुछ अप्रसन्न रह सकते हैं, मगर दयालु होंगे। आपकी प्रवृत्ति निम्नकोटि की हो सकती है, परंतु दिखावा आप सदाचारी होने का करेंगे। विपरीत लिंग के विधुर/विधवा से संबंध स्थापित कर सकते हैं। प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करें ताकि कोई असम्मानीय स्थिति न उत्पन्न हो।

शुभत्व में वृद्धि ओर अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000 जाप करें।